NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

M.S.O.E.-2

प्रवासी (डायस्पोरा) एवं पराराष्ट्रीय समुदाय

(Diaspora and Transnational Community)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Prabhat Kumar & Ved Prakash Sharma*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Content

डायस्पोरा एवं परराष्ट्रीय समुदाय

(Diaspora and Transnational Community)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2023 (Solved) 1
Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

डायस्पोरा और पारराष्ट्रीय समुदाय

डायस्पोरा की व्याख्या (Explaination of the Diaspora)

1. भारतीय डायस्पोरा और पारराष्ट्रीय (ट्रांसनेशनल) अध्ययनों की संकल्पना संबंधी बोध 1
(Indian Diaspora and Concept Related to Perception of International Studies)

2. भारतीय डायस्पोरा के अध्ययन के उपागम 8
(Theories of the Study of Indian Diaspora)

3. विश्व के डायस्पोरा समुदाय (Diaspora Communities of World) 15

भारतीय डायस्पोरा की यात्रा (The Journey of Indian Diaspora)

4. विदेश में भारतीयों का प्रवास एवं अधिवास 24
(Migration and Domicile of Indians in Foreign)

5. औपनिवेशिक शासन के दौरान भारतीय उत्प्रवास 30
(Indian Emigration during Colonial Rule)

6. स्वतंत्रता-पश्चात प्रवास के पैटर्न (Patterns of Migration after Independence) 36

भारतीय डायस्पोरा की रूपरेखा (Design of Indian Diaspora)

7. कैरीबिया में भारतीय (Indians in Carebia) 44

8. अफ्रीका में भारतीय डायस्पोरा (Indian Diaspora in Africa) 49

9. दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय डायस्पोरा 56
(Indian Diaspora in South and South-East Asia)

10. यूरोप में भारतीय डायस्पोरा (Indian Diaspora in Europe) 61

11. नई दुनिया : उत्तरी अमेरिका में भारतीय डायस्पोरा 67
(New World: Indian Diaspora in Northern America)

स्थानीय शासन के प्रकार (Types of Local Government)

12. आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और फिजी में भारतीय डायस्पोरा 73
(Indian Diaspora in Australia, Newzealand and Fiji)

13. पश्चिम एशिया में भारतीय डायस्पोरा (Indian Diaspora in West Asia) 80

प्रवासी और परराष्ट्रीय समुदाय

भारत और भारतीय प्रवासी समुदाय : अनुबंधन एवं नीतियां
(India and Indian Migrant Communities: Contract and Policies)

14. आप्रवासी एवं उत्प्रवासी नीतियां तथा उनके निहितार्थ 88
(Migrants and Emigrants Policies and their Context)

15. भारतीय राज्य तथा प्रवासी समुदाय (Indian State and Migrant Communities) 97

16. भारतीय प्रवासियों के मध्य सामाजिक-सांस्कृतिक अनुबंधन 105
(Socio-Cultural Contract among Indian Migrants)

17. भारतीय प्रवासी समुदाय : जन्मभूमि अनुबंधन 112
(Indian Migrant Communities : Motherland Contract)

18. साइबरस्पेस में भारतीय प्रवासी समुदाय 119
(Indian Migrated Communities in Cyberspace)

भारत और भारतीय प्रवासी समुदाय : प्रतिरूप एवं अवबोधन
(India and Indian Migrant Communities: Representation and Awakening)

19. फिल्में (Films) 125

20. भारतीय आप्रवासीय लेखन (Writings on Indian Migrants) 131

21. प्रचलित अवबोधन (Understanding in Vogue) 137

पहचान, राष्ट्र-राज्य एवं परा‌राष्ट्रीय समुदाय
(Identity, Nation-State and Transnational Communities)

22. पहचान, राष्ट्र-राज्य एवं प्रवासी समुदाय 143
(Identity, Nation-State and Migrant Communities)

23. उपराष्ट्रीय पहचान तथा प्रवासी समुदाय 148
(Sub-National Identity and Migrant Communities)

24. भूमण्डलीकरण, राष्ट्रीयकरण और परा‌राष्ट्रीय समुदाय 153
(Globalization, Nationalisation and Transnational Communities)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

प्रवासी (डायस्पोरा) एवं पराराष्ट्रीय समुदाय

M.S.O.E.-2

(Diaspora and Transnational Community)

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. पराराष्ट्रवाद, वैश्वीकरण एवं प्रवासी की संकल्पनाओं की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'पराराष्ट्रीयता, भूमंडलीकरण और डायस्पोरा', अध्याय-3, पृष्ठ-15, 'डायस्पोरा की समझ' तथा अध्याय-24, पृष्ठ-155, 'पराराष्ट्रवाद'

प्रश्न 2. 'बंदोवस्त समाज' क्या है? भारतीय डायस्पोरा के सभ्यागत सिद्धांत से इसके संबंध को उजागर कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-10, 'भारतीय डायस्पोरा और बहुसंस्कृतिवाद : सभ्यतामूलक और अधिवासी समाज' तथा पृष्ठ-12, 'समष्टि : एक रूपरेखा'

प्रश्न 3. खाड़ी क्षेत्रों के भारतीय डायस्पोरा की तुलना उत्तर अमेरिका के डायस्पोरा से कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-80, 'खाड़ी क्षेत्र में भारतीय' तथा अध्याय-11, पृष्ठ-72, प्रश्न 2

प्रश्न 4. क्या उत्प्रवास और आप्रवास संबंधी नीतियाँ, प्रवसन-पैटर्नों को प्रभावित करती हैं? अपने उत्तर की पुष्टि भारतीय डायस्पोरा को ध्यान में रखते हुए कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-14, पृष्ठ-88, 'प्रतिबंधित आप्रवास नीतियों का उद्‌भव', तथा पृष्ठ-90, 'मूल राष्ट्रों में विषय आधारित उत्प्रवासी नीतियों के प्रारूप'

प्रश्न 5. भारतीय उत्प्रवासन की औपनिवेशिक पृष्ठभूमि का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-25, 'भारतीय उत्प्रवास की औपनिवेशिक पृष्ठभूमि'

प्रश्न 6. फिजी में भारतीय डायस्पोरा की रूपरेखा (प्रोफाइल) की जाँच कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-77, 'फिजी में भारतीय डायस्पोरा'

प्रश्न 7. पंजाबी और गुजराती डायस्पोरा की प्रकृति की तुलना, उप-राष्ट्रीय अस्मिताओं के रूप में कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-23, पृष्ठ-149, 'भारतीय प्रवासी समुदाय : क्षेत्रीय आयाम', '1. पंजाबी प्रवास', पृष्ठ-150, 'पंजाबियों के अंतर्राष्ट्रीय नेटर्क, गुजराती प्रवासी समुदाय, गुजरातियों के पराराष्ट्रीय नेटवर्क'

प्रश्न 8. संयुक्त राज्य अमेरिका में भारतीय डायस्पोरा के बदलते प्रतिरूपों (पैटर्न) का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-70, 'संयुक्त राज्य अमेरिका में भारतीय डायस्पोरा की रूपरेखा'

प्रश्न 9. अफ्रीका के भारतीय डायस्पोरों के अस्मिता संबंधी मुख्य मुद्दों की जाँच कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-52, 'अफ्रीका में भारतीय मूल के लोगों की पहचान के मुद्दे : भारतीय प्रतिक्रियाएँ'

प्रश्न 10. भारतीय डायस्पोरा के अध्ययन में बॉलीवुड की अहमियत की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-19, पृष्ठ-125, 'बॉलीवुड तथा प्रवासी समुदाय : उपभोग एवं प्रस्तुतिकरण'

■ ■

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

प्रवासी (डायस्पोरा) एवं परराष्ट्रीय समुदाय

M.S.O.E.-2

(Diaspora and Transnational Community)

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. भारतीय डायस्पोरा के अध्ययन में प्रतिधारणवादी और अनुकूलनवादी दृष्टिकोणों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-3, 'भारतीय डायस्पोरा के अध्ययन के परिप्रेक्ष्य'

प्रश्न 2. भारतीय डायस्पोरा के सभ्यतागत सिद्धांत के संदर्भ में 'वसावट समाज' क्या है? चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-10, 'भारतीय डायस्पोरा और बहुसंस्कृतिवाद : सभ्यतापूर्वक और अधिवासी समाज' तथा पृष्ठ-12, 'समष्टि : एक रूपरेखा'

प्रश्न 3. खाड़ी क्षेत्रों में भारतीय डायस्पोरा की तुलना उत्तरी अमेरिका के डायस्पोरा से कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-80, 'खाड़ी क्षेत्र में भारतीय' तथा अध्याय-11, पृष्ठ-72, प्रश्न 2

प्रश्न 4. भारतीय डायस्पोरा अस्मिता के विनिर्माण और पुनर्निर्माण पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-33, 'पहचान की रचना और पुनःरचना'

इसे भी देखें–कोहेन (1997) का तर्क है कि एक प्रवासी विभिन्न देशों में समूह जातीय चेतना की बढ़ती भावना से उभर सकता है। एक ऐसी चेतना जो अन्य चीजों के अलावा, विशिष्टता की भावना, सामान्य इतिहास और सामान्य भाग्य में विश्वास से बनी रहती है। पहचान निर्माण प्रक्रियाएं और प्रवासी भारतीयों के भीतर इन प्रक्रियाओं को निर्धारित करने वाले अभिनेता 'रचनावाद और उदारवाद द्वारा साझा सैद्धांतिक स्थान' में स्थित हो सकते हैं। यहां तक कि गृह राज्य के बाहर स्थानिक रूप से स्थित होने की उनकी अनूठी स्थिति में भी, उनकी पहचान की धारणा स्थिर रहती है, क्योंकि 'अंदर के लोग' रिश्तेदारी की पहचान पर अत्यधिक जोर देते हैं। इसके अलावा, मेजबान देश की आबादी और उनके गृह देश की आबादी भी इस धारणा को साझा करती है। उनकी पहचान की धारणा सिर्फ इसलिए नहीं बदलती, क्योंकि उनका निवास स्थान और व्यवसाय बदल गया है। बार्थ (1969) का तर्क है कि जातीयता के रूप में पहचान अनिवार्य रूप से सीमाओं का निर्माण और रखरखाव है। इसके बाद पहचान निर्माण की व्याख्या अक्सर पहचान के सार के रूप में की गई है और कई लोगों द्वारा इसे सीमा निर्माण की चल रही प्रक्रिया की सामग्री के रूप में देखा जाता है, जिसे स्थिति की आवश्यकताओं के अनुसार लगातार पुनर्निर्मित और स्थानांतरित किया जाता है। चूँकि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विभिन्न श्रेणियों के श्रमिकों और पेशेवरों की मांग के जवाब में पश्चिम यूरोपीय देशों में भारतीयों का प्रवासन भी हुआ। हालांकि इन देशों में पी.आई. और एनआरआई के बीच अंतर ज्यादा नहीं है, फिर भी, बसने वालों की दूसरी पीढ़ी ने विभिन्न प्रक्रियाओं की एक अलग तस्वीर दिखाई है, जो पहचान निर्माण में मदद करती हैं। पश्चिमी दुनिया में भारतीय प्रवासियों की उपस्थिति की विशिष्टता इस तथ्य में निहित है कि यह मुख्य रूप से द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की घटना है। इसके अलावा, यह मूलतः एक कौशल-आधारित उत्प्रवास है। इसने पश्चिमी देशों में रहने वाले प्रवासी भारतीय समुदाय के भीतर पहचान निर्माण प्रक्रियाओं और इस प्रकार बनी पहचान की प्रकृति को आकार दिया है। भारतीय प्रवासियों के आंदोलनों की लहरों के वर्गीकरण में इस प्रवास को प्रवास की दूसरी लहर कहा गया है। इस प्रकार, प्रवासी अध्ययन सांस्कृतिक प्रवासन के बहुत ही दृश्य विषय पर और अंतरराष्ट्रीयवाद और उपनिवेशवाद के बाद की बहस पर एक महत्त्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य प्रदान करते हैं जो पुनरुत्थान वाली बहुसांस्कृतिक बहस में प्रतिध्वनि पाते हैं।

प्रश्न 5. यूरोपीय देशों में भारतीय प्रवास की दूसरी लहर की प्रकृति का परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-62, 'यूरोप में भारतीय डायस्पोरा की पृष्ठभूमि'

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

डायस्पोरा और पारराष्ट्रीय/पराराष्ट्रीय समुदाय
(Diaspora and Transnational Community)

डायस्पोरा और पारराष्ट्रीय समुदाय

डायस्पोरा की व्याख्या
(Explaination of the Diaspora)

NEERAJ PUBLICATIONS

भारतीय डायस्पोरा और पारराष्ट्रीय (ट्रांसनेशनल) अध्ययनों की संकल्पना संबंधी बोध

www.neerajbooks.com

(Indian Diaspora and Concept Related to Perception of International Studies)

1

परिचय

पाराराष्ट्रीयता की परिघटना भूमंडलीय प्रक्रिया की ही एक शाखा है, जिसमें मातृदेश से पहले की अपेक्षा अधिक वास्तविक एवं आभासी, अधिक दृढ़ और द्रुतगामी संबंध बना लिए हैं। इसने पुराने डायस्पोरा जिनका पहले अपने मातृदेश से कुछ हद तक संबंध विच्छेद हो गया था, को पुनः उनके मातृदेश से निरन्तर सम्पर्क मे ला दिया है। प्रस्तुत अध्याय में उन मौलिक संकल्पनाओं, परिप्रेक्ष्यों और उपागमों की चर्चा की गई है जिनका विद्वानों ने डायस्पोरा के अध्ययन के लिए सामान्य रूप से प्रयोग किया है। इसके अन्तर्गत डायस्पोरा की स्थितियों का विश्लेषण मुख्य रूप से भारतीय डायस्पोरा के सन्दर्भ में एक बृहत सैद्धान्तिक ढाँचे के तहत किया गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

पारराष्ट्रीयता, भूमंडलीकरण और डायस्पोरा

पारराष्ट्रीय प्रवास को प्रवास के ऐसे स्वरूप के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसमें यद्यपि व्यक्ति अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं के पार चले जाते हैं और नए देशों में बस जाते हैं तथा वहाँ सामाजिक संबंध बना लेते हैं, लेकिन फिर भी उस राष्ट्र से सामाजिक संबंध बनाए रखते हैं, जिसके वे मूल निवासी होते हैं। वे अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं के पार भी पारराष्ट्रीय सामाजिक क्षेत्र में रहते हैं। यद्यपि समुदाय अपने घर अथवा देश से बाहर चले जाते हैं फिर भी डायस्पोरा संबंध बनाए रखते हैं। सीमाओं से बाहर रहकर वे वास्तव में पारराष्ट्रीय हो जाते हैं। डायस्पोरा का

www.neerajbooks.com

पारराष्ट्रीय गुण भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण परिणाम है।

भूमंडलीकरण भूमंडलीय बाजार, भूमंडलीय संचार और भूमंडलीय नेटवर्क को अनिवार्य बनाता है। भूमंडलीकरण की सीमा के अन्तर्गत विकास की सभी अवस्थाओं से संबद्ध समाज इस तरह आते हैं कि विश्व पहले से अधिक परस्पर संबंधित हो गया है और विश्व के किसी भी हिस्से में घटने वाली घटनाओं का विश्व के अन्य हिस्सों पर प्रभाव पड़ता है। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया मुख्य रूप से तीन क्रियाओं द्वारा संचालित होती है–*(i)* बाजार *(ii)* नई प्रौद्योगिकी और *(iii)* पारराष्ट्रीय नेटवर्क।

बाजार की शक्तियाँ सैद्धान्तिक रूप से मुक्त और निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा पर निर्भर करती हैं, लेकिन व्यापार में संरक्षणात्मक नीतियाँ, परिवर्तनशीलता और अल्पावधि पूँजी-प्रवाह के नकारात्मक प्रभावों एवं अन्तर्राष्ट्रीय निवेश समझौतों में पूर्वाग्रह से ग्रसित हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में विकसित और विकासशील देशों के बीच का अन्तर बढ़ने लगता है।

क्लिफोर्ड के अनुसार अपने वास्तविक (गतिशील) और आभासी (दूरसंचार) दोनो अर्थों में डायस्पोरा यात्रा से संबंधित है और यह यात्रा विभिन्न रूपों में है–वास्तविक रूप से बहुत तेज और बार-बार यात्रा की क्षमता और आभासी रूप से यात्रा करने की क्षमता, जिसने डायस्पोरा को वर्तमान समय और युग का बाध्यकारी विषय बना दिया है। इसमें नई प्रौद्योगिकी विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी (आई.टी.) ने उत्प्रेरक की भूमिका निभाई है। सूचना प्रौद्योगिकी बहुत ही परिवर्तनशील है और इसके माध्यम से पूँजी का उपार्जन एवं मात्रा को तीव्रता के साथ विश्व स्तर पर संचरित और संचित किया जा सकता है। यह उपनिवेशवादी अर्थव्यवस्था से इस मामले में भिन्न है कि अब पूँजी ही श्रम का पीछा कर रही है न कि श्रम पूँजी का। भूमंडलीकरण और प्रवास के सम्पर्क में नई अर्थव्यवस्था की अन्तर्राष्ट्रीय श्रम प्रणाली को समझना जरूरी है।

ताम्बिया के अनुसार विश्लेषण के उद्देश्य से नेटवर्क को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–*(i)* ऊर्ध्वाधर नेटवर्क और *(ii)* पार्श्व नेटवर्क। ऊर्ध्वाधर नेटवर्क पोषी समाजों में बनते हैं जब समुदाय स्वेच्छा से या बलपूर्वक एक साथ आते हैं, जिससे भेदभाव से लड़कर और अधिक रूप से सफल होने के लिए विचार-विमर्श की नीतियाँ बनाई जा सके। पार्श्व नेटवर्क को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है–(क) पोषी समाज और उत्पत्ति के समाज/मातृभूमि के बीच, (ख) पारराष्ट्रीय भूमंडलीय नेटवर्क, जहाँ पूरे विश्व के डायस्पोरा एक-दूसरे से संवाद करते हैं और विशेष तौर पर मीडिया एवं यात्रा के द्वारा पारराष्ट्रीय संबंध बनाए जाते हैं।

डायस्पोरा, डायस्पोरिक, डायस्पोरिज्म जैसे शब्दों के उपयोग की इस आधार पर आलोचना की जाती है कि सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट, जैसे-यहूदी अथवा ग्रीक का सामान्यीकरण और सार्वभौमीकरण अनैतिक प्रक्रियाएँ हैं। विशेष तौर पर यह तर्क प्रस्तुत किया जाता है कि सामान्य डायस्पोराओं का मातृभूमि अथवा दोषी समाजों में उत्पीड़न, जो यहूदी डायस्पोरा में बार-बार दिखाई देता है, वह शासक ऐंग्लो-सैक्सन अल्पसंख्यक अधिवासी समाजों, जैसे–आस्ट्रेलिया या दक्षिण अफ्रीका में या तो दिखाई नहीं पड़ता या दिखाई पड़ता है। सैफ्रन ने अपने छः सूत्री मॉडल में डायस्पोरा की निम्नलिखित विशेषताएं बताई हैं-

(i) मातृदेश से बाहर विस्तार,

(ii) सामूहिक स्मृति का स्थायी रहना,

(iii) मातृदेश का दर्शन अथवा पौराणिक कथा,

(iv) पोषी समाज में आंशिक (कभी भी पूर्ण नहीं) समांगीकरण,

(v) मूल देश में वापस लौटने की आदर्श इच्छा,

(vi) देश के पुनरुद्धार की वांछनीय प्रतिबद्धता,

(vii) मातृदेश से संबंधों को जोड़ने का सतत प्रयास।

टोलोलियन डायस्पोरा की व्यापक समावेशकारी परिभाषा देते हुए कहते हैं कि "अप्रवासी, निष्कासित, शरणार्थी, अतिथि कार्यकर्ता, प्रवासी समुदाय, विदेशी समुदाय और जातीय समुदाय डायस्पोरा के अर्थ क्षेत्र में आते हैं।" वान हियर डायस्पोरा की संक्षिप्त परिभाषा देते हुए कहते हैं कि इसके "मूल मातृभूमि देश से दो या अधिक स्थान पर प्रसार, मातृभूमि और नए पोषी समाज के बीच आगमन और डायस्पोरा समुदाय के बीच अथवा उनके मध्य सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा आर्थिक आदान-प्रदान सम्मिलित हैं।" प्रवासी भारतीयों के सन्दर्भ में हेन्सन जैसे लेखकों ने दक्षिण अफ्रीकी भारतीय के लिए 'डायस्पोरा' शब्द की अनुपयुक्तता का एकदम विपरीत कारण बताया है। उनके अनुसार भारतीय मूल के लिए आतुरता और

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

आर्थिक और राजनैतिक। सांस्कृतिक रूप से बहुल समाज में असम्बद्ध और असंगत सांस्कृतिक वर्ग होते हैं, जिनके बीच संवाद बाधित होता है। आर्थिक रूप से, सांस्कृतिक वर्गों के बीच संबंध बाजार से संबद्ध होते हैं। राजनैतिक रूप से, इस प्रकार का बहुल समाज केवल बाहरी औपनिवेशिक शक्ति द्वारा शासित होने के कारण एकजुट होता है।

आर.के. जैन का कहना है कि बहुल समाज की संकल्पना जिस अर्थ में फर्नीवाल द्वारा इस्तेमाल की गई है वह, केवल "अधिवासी समाजों" पर ही लागू होता है, न कि सभ्यताओं पर। वास्तव में एम.जी. स्मिथ ने बहुल समाज के सिद्धान्त को आधुनिक औपनिवेशिक स्थितियों और यूरोपीय औद्योगिक विस्तार एवं अहस्तक्षेप पूँजीवाद के युग तक सीमित कर दिया है। स्मिथ ने इस सिद्धान्त को कैरीबियाई समाज के सन्दर्भ में विकसित किया था। आगे चलकर यह सिद्धांत बहुजातीय समुदायों के अध्ययन तक सीमित रह गया। बहुलवाद को संरचना और संस्कृति दोनों के अर्थ में, "एक ऐसी सामाजिक संरचना, जिसकी पहचान मौलिक असातत्य और विघटनों द्वारा और क्रमबद्ध संस्थागत विविधता पर आधारित सांस्कृतिक संकुल" के एक ही साथ लक्ष्यार्थ के रूप में परिभाषित की गई थी। संरचनात्मक बहुलवादी और विभेदी समावेश वाले समाज में स्थिरता और एकता प्रभावी समूह द्वारा बनाए रखी जाती थी। प्रभाव समूह सांस्कृतिक दृष्टि से अल्पसंख्यक होता था।

कैरीबियाई लोगों के संबंध में बहुल समाज संरचना की कुछ सीमाएं हैं। आर.टी. स्मिथ के अनुसार कैरीबियाई समाज अपनी जाति और उपभोग के स्तरों एवं संस्कृति की विविधताओं के बावजूद बहुल समाजों के सर्वाधिक खराब उदाहरण हैं।" वस्तुत: औपनिवेशिक शासन ने ऐसी स्थितियाँ पैदा कर दी थीं जो कैरीबियाई समाज के विभिन्न वर्गों को एक साथ जोड़े हुए थी। क्षेत्रीय उप-सांस्कृतिक अन्तर स्पष्ट नहीं था और प्रत्येक भाग केवल बाजार-क्षेत्र और आर्थिक प्रतिस्पर्धा के क्षेत्र में अलग था। दूसरी ओर फिजी बहुल समाज को परिप्रेक्ष्य के अधिक निकट है।

(4) जातीय अधिगम–जयवर्द्धने ने गुयाना और फिजी में संस्कृति के विविध रूपों के प्रश्न को जातीयता के मानदण्डों से देखा है। जातीय अधिगम, प्रस्थिति और शक्ति के संबंधों को व्याख्यात्मक प्रमुखता प्रदान करता है और जातीयता को इन कारणों से उत्पन्न होने के रूप में देखता है। जातीयता को जातीयता के रूप में निरूपित किया गया था और उसका अस्तित्व प्रसंगवश तथा राजनैतिक एवं ऐतिहासिक शक्ति के विशेष संयोजन पर निर्भर था। गुयाना में भारतीय आप्रवासी पारस्परिक भारतीय संस्कृति के मूल सिद्धान्तों को छोड़कर सब कुछ भूल चुकी थी। फलस्वरूप उन्हें काल्पनिक पहचान का ताना-बाना बुनने के लिए बाध्य होना पड़ा। यही कारण है कि इंडो-गुयानी लोगों में जातीय पहचान और जातीयता दोनों देखने को मिलते हैं वहीं फिजी में भारतीय आबादी में जातीय पहचान पाई जाती है, लेकिन जातीयता नही। इसका मुख्य कारण यह है कि भारतीयों ने अपनी मातृभूमि यानी भारत से लगातार सम्पर्क बनाए रखा और अपनी भारतीय पहचान को अपने जीवन का नियमित अंग मानते हैं। इस प्रकार जातीयता ने गुयाना में स्वयं को अभिव्यक्त किया है लेकिन फिजी में नहीं, क्योंकि वहाँ वर्ग, प्रस्थिति और शक्ति में ऐतिहासिक रूप निर्धारित है तथा महत्त्वपूर्ण अन्तर कायम है।

डूमोन्ड ने जयवर्द्धने के दृष्टिकोण की आलोचना करते हुए कहा है कि इसमें जातीयता को व्याख्यात्मक संकल्पनाओं के क्षेत्र में द्वितीयक प्रस्थिति प्रदान की गई है। उनका कहना है कि वर्ग और जातीयता अनेक सामाजिक व्यवस्थाओं के पहलू हैं और इसलिए वर्ग को जातीयता के ऊपर प्राथमिकता नहीं दी जा सकती। जयवर्द्धने के दृष्टिकोण की एक सीमा यह है कि यह विश्लेषणात्मक होने की जगह वर्णनात्मक है।

डूमोन्ड ने गुयाना में जातीय श्रेणियों से संबद्ध प्रतीकात्मक प्रक्रियाओं के मानव जाति संबंधी अध्ययन में भाषा/सांस्कृतिक मॉडल का उपयोग किया है। उनके विचार में जिस प्रकार अनेक भाषाओं के सह-अस्तित्व से क्रिओल (जाति संकर) भाषाएँ बन गईं, उसी प्रकार विभिन्न संस्कृतियों के सह-अस्तित्व से क्रिओल (जाति संकर) संस्कृतियाँ निर्मित हो गईं। परिणामस्वरूप अन्तर-प्रणालियों अथवा सांस्कृतिक सातत्यक पर आधारित समाज निर्मित हो गया, जिसके किसी विशेष संस्कृति का कोई भी घटक एक-दूसरे को अलग करता है।

(5) राजनैतिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य-जॉन रेक्स जैसे समाजशास्त्री का कहना है कि 19वीं शताब्दी के भारतीयों के आप्रवासन और 20वीं शताब्दी के औद्योगिक रूप से विकसित देशों के प्रवासों के बीच एक सततता है। वर्तमान समय में

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

नस्लीय अवरोध अविकसित देशों से महानगरीय देशों में श्रमिकों के आवगमन को नियंत्रित करते है। दूसरे शब्दों में, अल्पविकसित देशों में प्रवासियों को वह समान परिस्थिति प्रदान नहीं किया जाता है जो स्वयं महानगरीय देशों में भिन्न नस्ल के श्रमिकों को दिया जाता है, हालांकि वे एक ही आर्थिक वर्ग के होते हैं। सामान्य रूप में यह साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद की विश्वव्यापी प्रघटना द्वारा संचालित प्रक्रिया है जो 17वीं शताब्दी में प्रचलित थी, लेकिन उसके प्रभाव आज भी महसूस किए जा रहे हैं। अल्पविकास के विकास के सिद्धान्त के सिद्धान्तकार भी इन्हीं आधारों पर तर्क प्रस्तुत करते हैं। वे प्रवास, अधिवास और विदेशों में भारतीय समुदायों के निर्माण की प्रघटना को वैश्विक नजर से देखते हैं। इन सिद्धान्तकारों में सर्वप्रमुख बेकफोर्ड हैं। बेकफोर्ड ने एशिया और लैटिन अमेरिका में उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के औपनिवेशिक प्रदेशों में बगान की आर्थिक संरचना के निर्धारक प्रभाव का विश्लेषण किया है।

गुंडर फ्रैंक, वालरस्टीन और एलीन जैसे सिद्धान्तकारों ने पूँजीवाद के वैश्विक विकास के केन्द्र परिधि मॉडल (Core periphary Model) के सन्दर्भ में तर्क दिया है। इस दृष्टि से यह प्रतीत होगा कि 19वीं शताब्दी और उससे भी पहले की कुछ भू-राजनैतिक बाधाओं ने विश्व भर में असमान क्षेत्रीय आर्थिक विकास को आकार प्रदान किया। इस परिप्रेक्ष्य में, भारतीय डायस्पोरा विश्व जनसंख्या का विशेष रूप से अल्पविकसित और वंचित वर्ग प्रतीत होता है।

लगाव और जुड़ाव :
डायस्पोरा की 'मध्यवर्ती' अवस्था

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया के कारण विश्व में बढ़ते प्रवास से सभी स्थानों पर अनेक जगहों के लोग होते हैं, जो किसी मायने में सब जगह हैं और कहीं भी नहीं हैं। वे अपने पोषी देश के नागरिक हो सकते हैं, लेकिन उनकी पहचान उनके उत्पत्ति के देश से होती है। वे भले ही अपने गृहदेश की जड़ों एवं परम्पराओं से दूर रहते हैं, लेकिन अपने प्रवास के देश में जातीय समुदाय के रूप में सचेतन रूप से उससे जुड़े रहते हैं। इस प्रकार वे आसानी से लगाव और जुड़ाव के बीच की 'मध्यवर्ती' अवस्था में रहते हैं। भूमंडलीकरण और पारराष्ट्रीयता विक्षेत्रीकरण और पुनःक्षेत्रीकरण, जो अन्तर्राष्ट्रीय प्रवासन से संबंधित है, के मुद्दों पर सचेत करते हैं। इन प्रक्रियाओं में फंसे व्यक्तियों की 'मध्यवर्ती' पहचान की समस्याएं महत्त्वपूर्ण हैं। अत: राष्ट्रीय राज्यों के बीच, मातृभूमि, देश और नए समाजों के बीच, दोहद और हद के बीच गैर-आधुनिक सभ्यताओं और ज्ञानोदय के बाद के अधिवास समाजों के बीच, दो अथवा बहुल नागरिकता के बीच के व्यक्ति मध्यवर्ती अवस्थाओं के इन अन्वेषणात्मक द्विभाजनों के बीच फँसे हैं। इसी अन्तर को सर्वप्रथम विजय मिश्रा ने 1995 में उजागर किया था। आगे चलकर मेंक किओन ने भी स्पष्ट किया। आर.के. जैन ने इसे अफ्रीकी, चीनी, भारतीय और यहूदी डायस्पोरा के सन्दर्भ में विस्तृत रूप से बताया है।

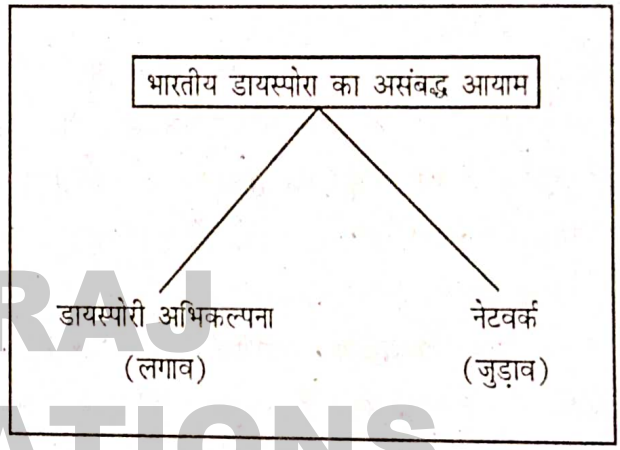

भारतीय सन्दर्भ में डायस्पोरा अभिकल्पना और भूमंडलीय नेटवर्क के बीच परस्पर अन्तर क्रियात्मक संबंध है। डायस्पोरा की अभिकल्पनाओं में व्यक्तिनिष्ठ रूप में पहचान के प्रश्न को एम्सेल की सिखों की पुस्तक में यू.के. और यू.एस.ए. के और संध्या शुक्ला और नीना वर्बनर की पुस्तक में मैनचेस्टर में बसे पाकिस्तानी मुस्लिमों को प्रमुखता प्रदान की गई है। नागरिकता के सामाजिक विधिक पहलुओं के संबंध में पहचान का प्रश्न उन लोगों की कृतियों में देखने को मिलता है, जिनकी नेटवर्को में रुचि है, जैसे टेम्ब्स-लाइच का गुजरातियों पर, मार्कोविट्स का सिंधियों पर, जिआंग-बिआओ और वोइट ग्राफ का ऑस्ट्रेलिया में भारतीय आई.टी. विशेषज्ञों पर दोनों ही घटनाओं के लेखकों की डायस्पोरा के पारराष्ट्रीय आयाम में रुचि है। इनमें प्रथम, विशिष्ट डायस्पोरा क्षेत्र को स्पष्ट करने के प्रयासों में विक्षेत्रीकरण के साथ-साथ पुनर्क्षेत्रीकरण के संबंध में भी बात करता है। दूसरा, राष्ट्र-राज्यों के साथ जातीयता अन्तरफलक से अधिक संबंध रखता है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com